आंध्रप्रदेश की परुषकवची (क्रस्टेशियाई) संपदाएं

जी.महेश्वरुडु, सी.के.सजीव और जे.बी.वर्मा

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र, पांडुरंगपुरम, विशाखपट्टणम, आंध्रप्रदेश

आंध्रप्रदेश के 9 जिलाओं में फैले 974 कि मी समुद्र तट और 33,227कि मी उपतटीय ढाल समुद्री मछलियों के योगदान से इस राज्य को संपन्न बनाता है। देश के कुल समुद्री मछली अवतरण में आंध्राप्रदेश का योगदान 7.2% है। 1996 - 2006 अवधि के दौरान यहाँ से मिला अवतरण 1,51,435 टन - 2,33,276 टन के बीच में था। पकडी गई संपदाओं में 84.5% विविध मछलियाँ क्रस्टेशियाई 14.5% मोलस्काई 1.0%, और बाकी अन्य समुद्री जीव थे। यद्यापि क्रस्टेशिया का योगदान कम है तथापि मूल्य की दृष्टि से यह आगे है, क्रस्टेशिया संपदाओं में पेनिआइड झींगे 9.9%, केकडा 2.8% और अन्य पेनिआइड झींगे 1.4% थे.m

पेनिआइड झींगे

2005-2007 के दौरान आंध्रा तट से मिले पेनिआइड झींगे का आकलित मात्रा 13,487 टन से 24,787 टन थे। इस में यंत्रीकृत ट्रालरों के ज़रिए 87.0%, गैर यंत्रीकृत गिल नेट से 4.6%, यंत्रीकृत गिलनेट से 3.8%, मोटोरीकृत गिलनेट से 2.0%, मोटोरीकृत संपाश (seine) से 1.0%, यंत्रीकृत संपाश से 0.97%, और गैर यंत्रीकृत संपाश से 0.55% झींगे प्राप्त हुए। यंत्रीकृत ट्रालरों का cph 9.5 कि.ग्राम था। मोटोरीकृत गिलनेट का cpue 3.95 कि ग्रा. मोटोरीकृत गिलनेट का 1.88 कि ग्रा था।

आंध्रा तट के प्रमुख ट्राल अवतरण केंद्र विशाखपट्टणम मछली बंदरगाह, काकिनाडा मछली बंदरगाह, भैरवपालम, मचिलीपट्टनम, निज़ाम पट्टिनम और ओडारेव हैं। इन छे अवतरण केंद्रों के करीब 1,290 यंत्रीकृत ट्रालरों का प्रचालन होता है। यंत्रीकृत नावों को छोटा ट्रालर और सोना बोट नामक दो वर्ग में बाँटा है। छोटा बोट 65.83 Hp इंजन फिट किया 9.0-11.0 मी लंबाई का है, जिसको 10-70 मी गहराई में मत्स्यन करने की क्षमता, 6-10 दिवस तक पर्यटन करने की सुविधा और 2-3 टन मछली के संभरण करने की धारिता है। सोना बोट की लंबाई 13.1 मी, इंजिन क्षमता 102 Hp है। इस का प्रचालन 100 मी गहराई तक कर सकता है। पर्यटन काल 0-15 दिवस और मछली की संभरण क्षमता 5 टन है। 23 जातियों के पेनिआइड झींगे यहाँ से उपलब्ध होता है। जाति और पकड प्रतिशत इस प्रकार है। *मेटापेनिअस मोनोसेरोस* 26.9%, *मेटापेनिअस डोबसोनि* 18.9%, *सोलिनोसीरा क्रासिकोर्निस* 13.2%, *पेनिअस इंडिकस* 8.5%, *ट्राकिपेनिआ करविरोस्ट्रिस* 4.2%, *पारापेनिऑक्सिस स्टाइलिफेरा* 3.8%, *मेटापेनिआपसिस स्ट्रिडुलनस* 3.5%, *सोलिनोसेरा मेलानथो* 3.2%, *पारापेनिआपसिस अंक्टा* 3.2%, *पेनिअस मोनोडॉन* 2.8%, *मोटोपेनिअस अफिनिस* 2%, *पारापेनिआपसिस माक्सिल्लिपेडो* 2.0%, *पारापेनिअस लोंगिसेपस* 1.9%, *मेटापियोपसिस बारबेटा* 1.9%, *पारापेनिआपसिस हारडविकी* 1.1%, *पेनिअस सेमिसलकाटस* .8%, *ट्राकिपेनिअस ग्रानुलोबस* 0.8%, *पेनिअस जपोनिकस* 0.5%, *मेटापेनिअस मोगिनसेस* 0.5%, *पारापेनिआपसिस कोरमंडलिका* 0.1% *ट्रकिपेनिअस सेविली* .02% *मेटापेनिअस ब्रेविकोरिस* .02%, *पेनिअस मेरगुएनसिस* .01% और अन्य छोटी झींगा 0.01% हैं।

पेनिआइड झींगों को वाणीज्यक,माध्यम आकार, छोटा आकार नामक तीन वार्गों में वर्गीकृत किए हैं। *पेनिअस मोनोडोन, पी. इंडिकस, पी. मेरगुएन्सिस, पी. सेमिसलकाटस, पी. जापोनिकस, मटापेनिअस मोनोसेरोस* और *एम. अफिनिस* वाणिज्यिक झींगे हैं। *मोटापेनिअस डोबसोनी* और *पारापेनिआपसिस स्टाइलिफेरा* माध्यम आकार के हैं। बाकी 14 जातियाँ जो 6 वंशों के हैं जैसा *ट्राकिपेनिअस सोलीनोसेरा, मेटापेनिआपसिस, पारापेनिआपसिस*, पारापेनिअस और मोटापेनिअस को छोटे वर्ग में जोडे हैं। वाणिज्यिक झींगा अपने आकार के अनुसार 70 - 783 / kg मूल्य पाता है। माध्यम आकार के झींगे को कि ग्रा. पर 60 से 100 रु. मिलता है जबकि छोटा झींगा 30 से 60 रु. प्रति कि. ग्राम में बेचा जाता है। पिछले दस वर्षों के संपदा विश्लेषण ने व्यक्त किया है कि वाणिज्यिक झींगों की पकड प्रतिशतता में कमी और बाकी दोनों की पकड प्रतिशतता में बढती हुई है। यह घटती ट्रालरों के परिचालन से हुआ है।

वाणिज्यिक झींगों के प्रभवों पर CMFRI द्वारा किए अध्ययन ने व्यक्त किया है कि *पी. मोनोडोन, पी. इंडिकस, पी.सेमिसलकाटस* और *मेटापेनिस मोनोसीरोस* नामक वाणिज्यिक झींगों की पकड उच्चतम वहनीय स्तर (MSY) पर पहुँच गई है। इसकी टिकाऊपन केलिए पकड पर नियंत्रण किया जाना चाहिए।

वाणिज्यिक और माध्यम आकार के झींगों का निर्यात होता है और छोटे झींगे देशी बाज़ारों में बेचे जाते है।

पीनेइड झींगा

केकडा

2005-2007 के दौरान मिले केकडा का आकलित पैदावार 5,405 से 6664 टन हैं। इस में यंत्रीकृत ट्राल से 64.1% गैरयंत्रीकृत गिल जाल से 15.2%, यंत्रीकृत गिल नेट से 13.8%, मोटोरीकृत गिल जाल से 4.4% और अन्य संभारों से 0.8% केकडा प्राप्त हुआ. यंत्रीकृत ट्रालर का cph 0.9 कि ग्रा था। अयंत्रीकृत गिल जाल का cpue 1.285 कि ग्रा और यंत्रीकृत गिल जाल का 1.92 कि ग्रा था।

पकड में 75.4% *पोर्ट्नस सांग्विनोलेन्टस*, 15.6% *पी. पेलाजिकस*, 6.1% *चारिब्डिस लूसिफेरा*, 3.9% *चारिब्डिस क्रूसिएटा* केकडा था। इन में सब से महंगा *पी. पेलाजिकस* है जिसका मूल्य 100 से 150 रु/ कि.गाम है. *पी. सांग्विनोलेन्टस* का मूल्य 40 - 50 रु/ कि.ग्राम रहा। पहले का निर्यात होता है और दूसरे की बिक्री देशी बाजारों में होता है।

केकडा

नॉन पीनेइड झींगा

2005-2007 के दौरान का नॉन पीनेइड झींगा पकड 1931 टन से 2620 के बीच रही. इसकी पकड केलिए मूलत: ट्राल जाल का उपयोग होता है। पकड में मुख्य रूप से चार जातियाँ पाई गई। पकड का 44% *पारापंडालस लोंगिकोडा*, 29.8% *नेमाटोपालेमन टेनुपिस*, 14.5% *ई. एनसिरोस्ट्रिस*, 11.5% असिटस *इंडिकस* और बाकी 0.2% अन्य नॉन पीनेइड थे. सभी जातियाँ सुखाकर स्थानीय बाज़ार में बेचा जाता है. इसके ताजे का मूल्य प्रति क्रि ग्राम 20 रु. है।

तालिका 1 आंध्रा तट में 2005-2007 के दौरान अवतरण की गयी क्रस्टेशियाई संपदाएं

संपदा / वर्ष	2005	2006	2007	माध्य
पीनेइड झींगा (ट)	13,487	22,378	24,787	20,217
नॉन पीनेइड झींगा (ट)	2,620	1,931	2,160	2,237
केकडा (ट)	5,405	6,664	5,154	5,741